# पतझर में टूटी पत्तियाँ

## सारांश

इस पाठ में दो प्रसंग हैं। पहला 'गिन्नी का सोना' का है जिसमें लेखक ने हमें उन लोगों से परिचित कराया है जो इस संसार को जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं। दूसरा प्रसंग है 'झेन की देन' जो हमें ध्यान की उस पध्दित की याद दिलाता है जो बौद्ध दर्शन में दी हुई है जिसके कारण आज भी जापानी लोग अपनी व्यस्ततम दिनचर्या की बीच कुछ चैन के समय निकाल लेते हैं।

### (1) गिन्नी का सोना

शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग होता है। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है जिससे यह ज्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मजबूत भी हो जाता है इस कारण औरतें अक्सर इसी के गहनें बनाती हैं। शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने की तरह होता है परन्तु कुछ लोग उसमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिलाकर चलाते हैं जिन्हें हम 'प्रैक्टिकल आइडीयालिस्ट' कहते हैं परन्तु वक़्त के साथ उनके आदर्श पीछे हटने लगते हैं और व्यावहारिक सूझबूझ ही केवल आगे आने लगती है यानी सोना पीछे रह गया और केवल ताँबा आगे रह गया।

कुछ लोग गांधीजी को 'प्रैक्टिकल आइडीयालिस्ट' कहते हैं। वे व्यावहारिकता के महत्व को जानते थे इसलिए वे अपने विलक्षण आदर्श को चला सकें वरना ये देश उनके पीछे कभी न जाता। यह बात सही है परन्तु गांधीजी कभी आदर्श को व्यावहारिकता के स्तर पर नही उतरने देते थे बल्कि वे व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा मिलाकर नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे इसलिए सोना ही हमेशा आगे रहता।

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। हर काम लाभ-हानि का हिसाब लगाकर करते हैं वे जीवन में सफल होते हैं, दूसरों से आगे भी जाते हैं परन्तु ऊपर नहीं चढ़ पाते। खुद ऊपर चढ़ें और साथ में दूसरों को भी ऊपर ले चलें यह काम सिर्फ आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्य जैसा कुछ है तो वो इन्हीं का दिया है। व्यवहारवादी लोग तो केवल समाज को नीचे गिराने का काम किया है।

### (2) झेन की देन

लेखक जापान की यात्रा पर गए हुए थे। वहाँ उन्होंने अपने एक मित्र से पूछा कि यहाँ के लोगों को कौन-सी बीमारियाँ सबसे अधिक होती हैं इसपर उनके मित्र ने जवाब दिया मानसिक। जापान के 80 फीसदी लोग मनोरोगी हैं। लेखक ने जब वजह जानना चाहा तो उनके मित्र ने बताया की जापानियों की जीवन की रफ़्तार बहुत बढ़ गयी है। लोग चलते नहीं, दौड़ते हैं। महीने का काम एक दिन में पूरा करने का प्रयास करते हैं। दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लग जाने से हजार गुना अधिक तेजी से दौड़ने लगता है। एक क्षण ऐसा आता है जब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है इस कारण मानसिक रोगी बढ़ गए हैं।

शाम को जापानी मित्र उन्हें 'टी-सेरेमनी' में ले गए। यह चाय पीने की विधि है जिसे चा-नो-यू कहते हैं। वह एक छः मंजिली इमारत थी जिसकी छत पर दफ़्ती की दीवारोंवाली और चटाई की ज़मीनवाली एक सुन्दर पर्णकुटी थी। बाहर बेढब-सा एक मिटटी का बरतन था जिसमे पानी भरा हुआ था जिससे उन्होंने हाथ-पाँव धोए। तौलिये से पोंछकर अंदर गए। अंदर बैठे 'चाजीन' ने उठकर उन्हें झुककर प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। उसने अँगीठी सुलगाकर उसपर चायदानी रखी। बगल के कमरे से जाकर बरतन ले आया और उसे तौलिये से साफ़ किया। वह सारी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण तरीके से कर रहा था जिससे लेखक को उसकी हर मुद्रा में सुर गूँज हों। वातावरण इतना शांत था की चाय का उबलना भी साफ़ सुनाई दे रहा था।

चाय तैयार हुई और चाजीन ने चाय को प्यालों में भरा और उसे तीनो मित्रों के सामने रख दिया। शान्ति को बनाये रखने के लिए वहाँ तीन व्यक्तियों से ज्यादा को एक साथ प्रवेश नही दिया जाता। प्याले में दो घूँट से ज्यादा चाय नहीं थी। वे लोग ओठों से प्याला लगाकर एक-एक बूँद कर डेढ़ घंटे तक पीते रहे। पहले दस-पंद्रह मिनट तक लेखक उलझन में रहे परन्तु फिर उनके दिमाग की रफ़्तार धीमी पड़ती गयी और फिर बिल्कुल बंद हो गयी। उन्हें लगा वो अनंतकाल में जी रहे हों। उन्हें सन्नाटे की भी आवाज़ सुनाई देने लगी।

अक्सर हम भूतकाल में जीते हैं या फिर भविष्य में परन्तु ये दोनों काल मिथ्या हैं। वर्तमान ही सत्य है और हमें उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते लेखक के दिमाग से दोनों काल हट गए थे। बस वर्तमान क्षण सामने था जो की अनंतकाल जितना विस्तृत था। असल जीना किसे कहते हैं लेखक को उस दिन मालूम हुआ ।

**लेखक परिचय**

**रविन्द्र केलेकर**

इनका जन्म 7 मार्च 1925 को कोंकण क्षेत्र में हुआ था। ये छात्र जीवन से ही गोवा मुक्ति आंदोलन में शामिल हो गए। गांधीवादी चिंतक के रूप में विख्यात केलेकर ने अपने लेखन में जन-जीवन के विविध पक्षों, मान्यताओं और व्यकितगत विचारों को देश और समाज परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। इनकी अनुभवजन्य टिप्पणियों में अपनी चिंतन की मौलिकता के साथ ही मानवीय सत्य तक पहुँचने की सहज चेष्टा रहती है।

**प्रमुख कार्य**

कृतियाँ - कोंकणी में उजवाढाचे सूर, समिधा, सांगली ओथांबे, मराठी में कोंकणीचें राजकरण, जापान जसा दिसला और हिंदी में पतझड़ में टूटी पत्तियाँ

पुरस्कार - गोवा कला अकादमी के साहित्य पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कार।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

1. व्यावहारिकता - समय और अवसर देखकर काम करने की सूझ
2. प्रैक्टिकल आईडियालिस्ट - व्यावहारिक आदर्श
3. बखान - बयान करना
4. सूझ-बुझ - काम करने की समझ
5. स्तर - श्रेणी
6. के स्तर - के बराबर
7. सजग - सचेत
8. शाश्वत - जो बदला ना जा सके
9. शुद्ध सोना - बिना मिलावट का सोना
10. गिन्नी का सोना - सोने में ताँबा मिला हुआ
11. मानसिक - दिमागी
12. मनोरुग्न - तनाव कर कारण मन से अस्वस्थ
13. प्रतिस्पर्धा - होड़
14. स्पीड - गति
15. टी-सेरेमनी - जापान में चाय पिने का विशेष आयोजन

16. चा-नो-यू - जापान में टी सेरेमनी का नाम
17. दफ़्ती - लकड़ी की खोखली सड़कने वाली दीवार जिस पर चित्रकारी होती है
18. पर्णकुटी - पत्तों से बानी कुटिया
19. बेढब से - बेडौल सा
20. चाजीन - जापानी विधि से चाय पिलाने वाला

## पाठ का सार

इस पाठ में दो प्रसंग सम्मिलित हैं।

**1. गिन्नी का सोना -**शुद्ध सोना अलग होता है और गिन्नी का सोना अलग होता है। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया जाता है, इसलिए यह अलग से चमकता है। यही कारण है कि यह श्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मज़बूत होता है। औरतें इसी सोने के गहने बनवाती हैं।

लेखक सोने के माध्यम से आदर्शों की बात करता है। शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के समान होते हैं। कुछ लोग उसमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा-ताबाँ मिलाकर उसे चलाते हैं। इन लोगों को हम 'प्रै्रक्टिकल आइडियालिस्ट' कहते हैं। वास्तविकता में बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। कुछ समय पश्चात आदर्श पीछे हटने लगते हैं तथा व्यावहारिक सूझ-बूझ आगे आने लगती है। कुछ लोग कहते हैं कि गांधीजी प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे। वे व्यावहारिकता को पहचानते थे। इसीलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। गांधी जी कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबा में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। इसीलिए सोना हमेशा आगे आता रहा। व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं तथा अन्यों से आगे जाते हैं। पर क्या वे उपर चढ़ पाते हैं। खुद उपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी उफपर चढ़ा लें । यही महत्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज को आदर्शवादी लोगों ने ही शाश्वत मूल्य दिए हैं। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

**2. झेन की देन -** इस प्रसंग में जापान की दिनचर्या एवं रहन-सहन का वर्णन करते हुए लेखक कहता है कि जापान में अस्सी फीसदी लोग मनोरोगी हैं। यहाँ जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ व्यक्ति चलते नहीं हैं बल्कि दौड़ते हैं। यहाँ लोग बकते हैं तथा एकांत में बड़बड़ाते रहते हैं। यहाँ के लोग अमेरिका से टक्कर लेने की होड़ में एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करते हैं। इससे तनाव बढ़ता है। यही कारण है कि यहाँ मानसिक रोगी बढ़ रहे हैं। लेखक के जापानी मित्र उन्हें एक शाम एक टी-सेरेमनी में ले गए। यह चाय पीने की एक विधि है। जापानी में इस विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

वह एक छह मंजिली इमारत थी, जिसकी छत पर दफ्रती की दीवारों वाली और तातामी (चटाई) की ज़मीन वाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर एक बेढब-सा मिट्टी का बरतन था। उसमें पानी भरा हुआ था। उस पानी में उन लोगों ने हाथ-पाँव धोए। तौलिये से पोंछकर अंदर गए। अंदर बैठे 'चाजीन' ने उन्हें झुककर प्रणाम किया और बैठने की जगह दिखाई। फिर उसने अँगीठी सुलगा कर उस पर चायदानी रखी। वह बगल के कमरे से कुछ बरतन ले आया। उसने तौलिये से बरतन साफ किए। उसने ये सब कार्य अत्यंत संज़ीदगी से किए। उस शांत वातावरण में चायदानी के पानी का उबाल भी सुनाई दे रहा था। चाय तैयार होने पर उसने उसे प्यालों में भरा। फिर उसने वे प्याले हम तीन मित्रों के सामने रख दिए। वहाँ की विशेषता यह है कि वहाँ तीन आदमियों से श्यादा को प्रवेश नहीं दिया जाता। प्यालों में दो घूँट से श्यादा चाय नहीं थी। वे लोग होंठों से प्याला लगाकर एक-

एक बूँद चाय पीते रहे। करीब डेढ़ घंटे तक चुस्कियों का यह सिलसिला चलता रहा। इस गतिविधि से दिमाग की रफ़्तार धीमी पड़ने लगी। फिर थोड़े समय बाद पूरी तरह से बंद हो गई। लेखक को लगा कि वह अनंतकाल में जी रहा है। उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। अकसर हम या तो गुशरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। हमें उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते लेखक, के मन से भूत और भविष्य, दोनों काल उड़ गए थे। उसके सामने केवल वर्तमान क्षण था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था। उस दिन लेखक को जीने का वास्तविक अर्थ मालूम हुआ। जापानियों को झेन परंपरा की यह एक बड़ी देन है।